H.W
16/6/21

गिल्लू

Date
Page 8

1. गिल्लू पाठ का सारांश अपने भाषा में लिखिए।

लेखिका महादेवी वर्मा को जूही के पौधे की पीली कलियों की तलाश रहती थी परन्तु आज वह अपनी पालतू गिलहरी की तलाश रहती है जो अब मर चुकी है और लेखिका ने उसे जूही के पौधे की जड़ में दबा दिया था।

एक दिन जब लेखिका सवेरे कमरे से बरामदे में आई तो उन्होंने देखा कि एक छोटे-से-जीव गमले और दीवार को जोड़ने वाले भाग पर पड़ी थी, वह एक गिलहरी का छोटा-सा बच्चा था जो जिसके शरीर में कौवों की चोंचों के दो घाव का निशान था, उस नन्ही सी गिलहरी का दर्द लेखिका से रहा न गया इसलिए लेखिका ने उसे कमरे में लेकर रुई से उसका खून साफ़ किया और पेंसिलिन नामक दवा का मरहम लगाया फिर कई घंटे तक इलाज करने के बाद उसके मुँह में एक बूंद पानी टपकाया जा सका। तीसरे दिन वह अच्छा और निश्चिन्त हो गया। लेखिका ने उसका अच्छे से ध्यान रखा जिसके परिणाम वह तीन-चार महीनों में पूरी तरह ठीक हो गया और आकर्षक बन गया। फिर लेखिका ने उसका नाम 'गिल्लू' रख दिया, लेखिका ने एक फूल रखने की हलकी सी डाली में रुई बिछाई और एक तार की मदद से उसे खिड़की पर टाँग दिया। दो साल तक यही फूल रखने की हलकी डाली ही गिल्लू का घर थी। गिल्लू लेखिका का ध्यान भड़काने के लिए वह लेखिका

के पैर तक आता था और तेज़ी से परदे पर चढ़ जाता था और फिर उसी तेज़ी से उतर जाता था। यह क्रम तब तक चलता था जब तक लेखिका उसे पकड़ने के लिए नहीं उठती थी। इसी कारण लेखिका ने उसको एक लंबे लिफ़ाफे में इस तरह से रख देती है थी कि उसके अगले दो पंजों और सिर के अलावा उसका छोटा सा पूरा शरीर लिफ़ाफे के अंदर बंद रहता था। गिल्लू को भूख लगने पर वह चिक-चिक की आवाज़ कर लेखिका को सूचना देता था और वह काजू या बिस्कुट कुतरता रहता था। प्रथम बसंत आने पर लेखिका खिड़की पर लगी जाली की कीलें निकालकर जाली का एक कोना खोल दिया और इस रास्ते से गिल्लू बाहर जा कर अपने दोस्तों के साथ खेलता था। गिल्लू कभी फूलदान के फूलों में छिप जाता, कभी परदे की चुन्नट में और कभी सोनजुही की पत्तियों में छिप कर लेखिका को चौंका देता था। एक दिन लेखिका मोटर दुर्घटना में घायल होकर कुछ दिन अस्पताल में रहना पड़ा। लेखिका के बिना गिल्लू काजू नहीं खा रहा था और जब लेखिका घर लौटी तो वह उसके झूले में काजू भरे हुए देखी और उनको पता चला कि गिल्लू उन दिनों अपना मनपसंद खाना भी कम खाता था। गिलहरियों के जीवन का समय दो वर्ष से अधिक नहीं होता, इसी कारण गिल्लू की जीवन यात्रा का अंत भी नज़दीक आ ही गया। गिल्लू के पंजे इतने ठंडे हो रहे थे कि लेखिका ने जागकर

हीटर चलाया और उसके पंजों को गर्मी देने का प्रयास किया। परंतु सुबह की पहली किरण के स्पर्श के साथ ही वह किसी और जीवन में जागने के लिए सो गया अर्थात उसकी मृत्यु हो गई।